{7.}

पंचदेव

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल



पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-84-1

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 7
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

किरदानी

रामरूप प्रसाद जे छह मास पहिनहि लेबर-कमिश्नरक पदसँ सेवा-निवृत भेल छला, गाम एला।

नव लोकक आगमनसँ गाममे चहल-पहल शुरू भेल। जेते मुँह तेते बोल, कियो 'बौआ भाय' तँ कियो 'बौआ काका' तँ कियो 'लाल बौआ' कहि-कहि रामरूप प्रसादकेँ सम्बोधित करैत। धिया-पुताकेँ मतलबे कोन जे के आएल के गेल। जुआन-जहानसँ लऽ कऽ चेतन-अधवेशू धरि अपन-अपन हाजरी दर्ज करबए पहुँच रहल छला। केना नै पहुँचतैथ, गामक पहिल बेकती जे एते नमहर हाकिम छैथ...। किए बुझत जे हाकिमपना चलि गेलैन, खलिये रामरूप छैथ।

बेठेकानो आमक गाछपर गोला फेक पाकल आम तोड़ने तँ अनठेकानो ने ठेकाने बनि जाइए, तहिना अपन गामक पूर्वपीठिया देख जँ गौंआँ रामरूप बाबूकेँ भेँट करए अबै छैथ तँ अपन समाजिकतो ने निमाहि लइ छैथ। जाबे धरि कमिश्नर साहैब काज करै जोकर छला ताबे धरि गाम दिस तकबे ने केलैन आ जखन अथबल, श्रमहीन भऽ गेला तखन गाम मन पड़लैन। गाम कि मन पड़ितैन, मन पड़लैन पिताक पुश्तैनी भूमि। पुश्तैनी भूमि तँ हजारो लाखो अछि मुदा से नै, केते खेत आ ओकर केते मूल्य भेल। खाएर, किछु हुअए मुदा स्वतंत्र देशक

नागरिक होइक नाते एते तँ अधिकार सभकेँ छइहे जे जे मन फुड़ै, जेना मन फुड़ै तेना अपन सम्पैतक उपयोग करए। चाहे बेल रोपए आकि बगूर। मुदा एहनो की नै होइए जे अनकर गोरहा, चौमासकेँ बाँस-गाछ रोपि अछाह करि नष्ट कऽ देल जाइए?

चाह-पर-चाह, पान-पर-पान रामरूप बाबू दिससँ चलि रहल अछि, लोकक आवा-जाही अछिए। लोको लाज तँ ओहने ने लाज भेल जेहेन वैदिक लाज होइए। ओना, किछु गोरे जे भरि दिन रौद-वसातमे रहै छैथ हुनकर दुनियोँ तँ अँगने भरिक छैन, ओकरा आनसँ मतलबे कोन? जेतबे अँगना रहत तेतबे पथार पसारब। मुदा फुसन काका कमिश्नर साहैबसँ भेँट करए एला।

फुसन काका गामक ओहेन लोक जिनका अदहा गामक लोक फुसियाह झुट्ठा कहै छैन तँ अदहा गामक लोक उचितवक्तो आ ठाँहि-पठाँहि बजनिहार सेहो तँ कहिते छैन। ई तँ अद्भुत खेल अछि जे एके गोरे दुनू केना? साल-दू-साल फुसन काका कमिश्नर साहैबसँ जेठे रहैथ, मुदा जेठ-छोट उमेरेटा सँ नै मानल जाइए दोसरो-तेसरो कारण छै, खाएर जे छइ। फुसन काका कमिश्नर साहैबक बगलेमे बैस पहिने तँ दोसर-तेसरक बात सुनलैन मुदा चाह पीला, पान खेला पछाइत अपनो मुँह खोललैन-

“जुगो पछाइत दुनू गोरे एकठाम भेलौं, सभ हरेलहा समय हेरा गेल। केम्हर-केम्हर उदए भेलै?”

कानून-कायदाक लोक रामरूप बाबू तँए शास्त्रीय भाषाक बोध नै। मुदा तैयो अपन बात रखैत बजला-

“अपन जे पाँचो बीघा चौमास अछि तइमे सागवानक खेती करब।”

कमिश्नर साहैबक बात सुनि फुसन कक्काक मन कड़कलैन। कड़कलैन ई जे दसे बीघा नकोर जमीन गाममे अछि, तेहेन चौरियाह गाम अछि जे केकरो घर छै तँ अगवास नै आ अगवास छै तँ गाछी-कलम

नै, तैठामक खेतमे सागवानक खेती गाममे हएत! वन विभागकेँ बोनक जंगलेटा सुझै छै मंगल नै सुझै छइ। दुनियाँक कोन एहेन उपजा अछि जेकरा मिथिलांचलक भूमि अंगीकार करैक शक्ति नै रखैए, मुदा ई तँ विचारणीय भेल। बर्खाक कटाउ हौउ आकि बाढ़िक आकि वायु प्रदूषन, गाछ-बिरीछ तँ जरूरी अछिए। मुदा जैठामक गाछ फलो दइए, लकड़ियो दइए, नीक ऑक्सिजनो दइए तेकरा छोड़ि जे एकमुश्त पनरह बरख सम्पैतकेँ घेरावंदी कऽ लेब! तहूमे जेकर उपयोग अपना जिनगीमे नै..!

मुदा बजला किछु ने। हड़ताली कर्मचारी जकाँ मुँहमे ताला झुलौने रहला, तरे-तर हूँहकारी भरैत रहला। चारूकात घुमा-घुमा मुड़ी डोलबैत रहला। मन केम्हरो, शकल-सूरत केम्हरो घुमि रहल छैन! समाज दिस नजैर पड़िते मन हुमड़लैन। हुमड़लैन ई जे समाजोकेँ की डोराडोरि छै जे डाँड़ सक्कत रहतै। बिनु डोराडोरिक समाज केमहर करवन ससैर जाएत तेकर कोनो ठेकान छइ। नीक करू आकि अधला, किछु गोरे तँ संग पुरनिहार हेबे करता, जखन समूह संग पुरनिहार तखन समाजक जँ विरोधो अछि तँ समर्थनो तँ अछिए। समाजे पाबि ने कियो शक्तिशाली बनैए। भलेँ समाज जेहेन होइ। नमहर भेने नमहर आ छोट भेने छोट। तहिना नीकक बनने नीक आ अधलाक बनने अधला...।

मुदा लगले फुसन कक्काक मनमे उठलैन, एक तँ ओहिना पाइ-कौड़ीबला लोक रामरूप बाबू छैथ, तैपर सरकारक बीच अपन हश्तियो छैन। बढ़ा-चढ़ा कऽ बजबे करता, अनेरे दसटा फलतुआ लोको संग देबे करतैन। गपे-सप्पमे विचार भेद भेने ने गारि-मारि अबैए, किए ने औत..?

फुसन कक्काक गुमी देख रामरूप प्रसाद बुझलैन जे भरिसक विचार नीक लगलै। अपन विचारकेँ आरो मजगूती दैत बजला-

“एकटा बात बुझल अछि किने?”

‘एकटा बात’ सुनि फुसन काका चौंकला। चौंकैक कारण भेलैन जे गामक बात आकि बाहरक। मन गवाही देलकैन जे बाहरसँ मतलबे की

आ गाममे रहै छी हम आ हमरे नै बुझल रहत...।

अह्लादित अतिथि जकाँ आँखि-भौ, मुँह बिहुसबैत पुछलखिन-

“से की?”

मुँह बाउल बच्चा जकाँ फुसन काकाकेँ बुझि चहरा दैत रामरूप बाबू कहलखिन-

“खाली अपने खेतीक बात नै अछि, गामक जे कियो सागवानक खेती करए चाहता सभकेँ सरकारी अनुदान दिआ देबैन। हमहूँ ओही विभागसँ ने जुड़ल छी।”

जहिना तामस उठला पछाइत बुधियार, गिलास भरि पानि पीब तामसकेँ दबैत अछि तहिना फुसन काका पानक खिल्ली बदलैत, रीशकेँ कम केलैन। मुदा पेटक वायु डिरियए लगलैन। डिरियए ई लगलैन जे जो रे अन्हरा लोक, अन्हरा गाम आ अन्हराएल अन्हरा...। कहू! जे मिथिलांचलक भूमि ओहन सक्कत-सक्कत गाछ-बिरीछकेँ पेटमे समेटने अछि जेकर तख्तामे बन्दूकक गोली नै छेद सकैए, ओहन गाछ जे प्रकृतिक रंगक संग ओहन-ओहन फलो दइए जेकर तुलना कोनो आन भूमि नै कऽ सकैए, तैठाम जँ लोकक एहेन धारणा बनि जाए जे पनरह-बीस सालक खेती एक बेर पूजी लगौलासँ भऽ जाएत, बाँकी साल निगरानी भरि, तखन खेतबलाक हाथमे पनरह-बीस बरख धरि काज की रहल?

रामरूप बाबूक विचार सुनि फुसन काका जेना मनक लोकसँ आगू बढ़ि संकल्पित लोक पहुँच गेला। समाजकेँ अपन गाम-समाजक विचार अपना ढंगसँ करए पड़तै। मुदा से ओहिना करतै आकि समाजक नीक-अधलाक विचार करैत करत। कोन गाम एहेन अछि जइमे शिक्षाक मदमे गैर सरकारीसँ लऽ कऽ सरकारी धरि करोड़ोमे नै चलि रहल अछि, मुदा शिक्षाक स्तर की अछि...।

अकछैत मन फुसन काकाकेँ विचार देलकैन-

“कियो कीमती हरिअर-सुखाएल तरकारी बुझि अपना खेतमे सांगरीए लगा लेत तँ लगा लिअ! मुदा अपन की हएत से विचार करैत करह... ।”

उठैत-उठैत फुसन काका बजला-

“अखन रहब किने?”

फुसन कक्काक मोनक बात जे हौउ, मुदा रामरूप बाबू बजला-

“जेना अहाँ सभ रहए देब तहिना ने रहब?”

सभ बातक जवाब टटके नीक नै होइ छइ। चुपे-चाप फुसन काका विदा भेला। मुदा मन कहलकैन-

“एहेन किरदानी आकि किरदानी केनिहारक बास समाजमे उचित नै..!”

गामक ओहेन परिवारमे रामरूप प्रसादक जन्म भेल छेलैन जेकरा समाजमे सुभ्यस्त मानल जाइ छेलै। पनरह बीघासँ ऊपर जमीन, पिता मेहनती किसान, कहियो परिवार चलबैमे खाँच नै भेलैन। तैसंग समाजमे पैंचो-पालट करिते छला। गाममे स्कूल नै रहने रामरूप ममहरेमे रहि मिडिल पास केलक। मिडिल पास केला पछाइत होस्टलक खर्च पिता दिअ लगलखिन। आन विद्यार्थी जकाँ रामरूपकेँ कहियो ने भेलैन जे कोर्सक किताव नै अछि आकि फीसक दुआरे परीछे छूटि गेल। मैट्रिक पास केला पछाइत पिताकेँ अपन हाथक मेहनत कएल पाइक मोल लालमे बुझि पड़लैन। एते तँ बात ऐछे जे पितोकेँ कहियो हाँट-दबार करैक मौका रामरूपक प्रति नै भेटलैन। कहियो कानमे भनक नै लगलैन जे आन-आन जकाँ ताड़ी-दारू करैए। तैसंग साले-साल पासक फल सुनि मनमे गदगदी चढ़िते गेलैन। कौलेजमे नाओं लिखबैक प्रश्न जखन रामरूपक उठलैन तखन पिता स्पष्ट कहि देलखिन-

“ऐ धनकेँ जेते चला-बना पुरा सकब तेते तँ पुरेबे करब मुदा जखन नै पूरत तखन खेतो-पथार तँ ऐछे, मुदा जँ तोहर विचार आगू पढ़ैक छह

तइमे नै रोकबह। अखने तोरा समय छह, पछाइत जखन घर-परिवारमे ओझरेबऽ तखन एहेन समय थोड़े भेटतह, से नै तँ अनुकूल समय छह हमर खर्च तोहर पढ़ाइ।"

बी.ए. पास केला पछाइत देश स्तरक तँ नै मुदा राज स्तरक प्रतियोगिता परीक्षा रामरूप जरूर पास केलैन। जइसँ समयक अनुकूलता पबैत कमिश्नर भऽ रिटायर केलैन। जाबे तक नोकरी केलैन ताबे तक गाम बिसैर गेल छला मुदा काजसँ पलखैत भेने, सेवा निवृत भेने आब गाम मन पड़लैन। मन पड़लैन पिताक चास-बास...। ओना, समाजो, परिवारो आ पितोक देल जिनगीक साइयो-हजारो धरोहर सम्पैत अछि मुदा ऐठाम से नै। पितोकेँ पूर्वजक देल आ अपन अरजल खेते-पथार भरि अछि। समय किछु हौउ, मुदा एहनो परिवारक कमी मिथिलाक पेटमे नै अछि, आ ओकरा नकारलो नहियेँ जा सकैए, जे पुर्खाक देल सम्पैतकेँ, खेत-पथारकेँ लाड़ि-चारि अपन जिनगी निमाहैत ओइ सम्पैतकेँ अमानत रखि ऐगला पीढ़ीकेँ बिनु कहनौं-सुननौं सुमझबैत आएल अछि। तहिना रामरूपो बाबूकेँ अपन पिताक चास-बासपर नजैर पड़लैन।

जेठ मासक सौंझका झकासक पछाइत पूर्बाक लहकीमे ओसारपर बैस पटनेसँ गामक आनन्द रामरूप बाबू लइ छला। तही बीच चाहक कप नेने पत्नी पहुँचलैन। ओना, आँखिक टकटकी रहैन मुदा ज्योति विहीन। पत्नीकेँ नै देख पौलैन...।

ओना, कादम्बरी बुझैत जे केम्हरो मन भँसि गेल छैन तँए कप बढ़बैत बजली-

"चाह पीब लिअ, भक टुटि जाएत।"

कहि बगलेक कुरसीपर बैस अपनो चाह पीबए लगली। चाहक चुस्की लैत रामरूप बाबू बजला-

"गाममे बहुत सम्पैत अछि ओकर उपयोग केना करी तैबीच नजैर घुसिये ने रहल अछि।"

बहुतो एहेन तँ छैथे जिनका ठोरेपर बरी पकै छैन। प्रश्न पुरल आकि नै पुरल, उत्तर पहिने दऽ देता। भलैं उत्तर नूनगर भेल आकि कड़ू आकि मीठनोन, तेकर चिन्ता नै। तहिना कादम्बरियो छैथ। केना नै रहती। अर्थशास्त्री पिताक बेटी, तैपर अपनो आनर्सक संग एम.ए. अर्थशास्त्रेसँ केने छैथ। बजली-

"आइक पूजीमे करोड़ोक सम्पैत अछि, बेचि कऽ बैंकमे जमा कऽ लिअ, लाखोमे आमदनी बढ़ि जाएत।"

गरूड़ जहिना कागभुसुण्डीक बात धियानसँ सुनैत तहिना रामरूप बाबू पत्नीक बात सुनलैन। मुँहमे तँ ताला लगौने रहला मुदा भीतरे-भीतर मन हौंड़ए लगलैन। अपन नोकरीक जिनगी मन पड़लैन, जिनगी भरि पाइए हँसोंथलौं, जइसँ पटना सन शहरमे दस कट्ठाक घराड़ीमे तीन मंजिला मकान बनेलौं, पेन्शन भेटैए, बैंकोमे ऐछे! तखन जँ बाप-दादाक देल जमीन बेचि समाजसँ नाक कटाएब, ई हमरा सन लोक लेल केते उचित हएत? बच्चाक महिरम जेना माए-बाप बुझैए तहिना ने खेतो अरजनिहार खेतक बुझै छइ। की केकरो दस कट्ठाक चौमास पूर्वज अहीले देलैन जे जा बेटा बेचि कऽ बैंकमे रखि लिहऽ जे खूब सुइद हेतह। आकि ओ बारहो मासक कामधेनु बुझि देलैन? मुदा आइक बहरबैयाक जे रूप-रंग कहियौ आकि नव कृषक संस्कृति पकैड़ लेलक अछि ओइसँ उपजा-वाड़ीक रूप की वएह रहत? ने राधाकेँ नअ मन घी हेतैन आ ने राधा नचती। ने गाछमे डारि हएत आ ने कियो मचकी झूलता...।

रामरूप बाबूक मन हुमड़लैन, पत्नीक पैत्रिक सम्पैत नै छिऐन- पैत्रिक सम्पैतक माने परिवारिक विचारधारा- ओ अपन छी, ओकर रक्षा के करत? नै! पत्नीक विचार नै सुनबैन। कोनो परिस्थितिमे खेत नै बेचब। विचारक दृढ़ता मुँह फोड़ि निकललैन-

"बाप दादाक मान-सम्मानसँ जुड़ल जमीन अछि, ओकर उपयोग केना हएत ई विचारणीय भेल।"

अखन धरिक जिनगीमे रामरूप बाबू पत्नीक विचारकेँ अड़ेज नेने छला। सेहो ओहिना नहि, हुकुमदारी करैत-करैत एहेन मोड़ बनल जइमे दुनू बेकती निर्णय केलैन जे दरमाहा पत्नीक हाथ जेतैन आ ओ घर चलौती। जइसँ जेना पुरुखक कलंक उठैए जे फल्लाँ फल्लाँठाम, से तँ झूठ भइये जाएत। अँगने नै तँ राधा नचती केतए? मुदा ऊपर-फटकी आमदनी तँ बिनु आड़ि-मेड़क होइए, ओ केना हिसाबमे औत? ओना, अइले घोंघौज दुनूक बीच भेलैन, मुदा ओ परिवारक हिसाबसँ बाहर रहल। मुदा ओकरा केना कामयावी बनाबी यएह ने भेल बुधियारी। जहिना कादम्बरीक मन छेलैन जे पतिक सोलहन्नी कमाइ हाथ आबए, सएह भेबो केलैन। जे निर्णयक पछाइत रामरूप बाबू मासे-मासे चेक पत्नीक हाथ दैत रहलखिन। तइसँ एते तँ भेबे केलैन जे मछट्टा जाइक जरूरत नै पड़लैन। नून-सँ-हरदी तकक भार कादम्बरीएपर रहलैन। जइसँ कादम्बरियो अपनाकेँ बेरोजगार नहियेँ मानली। ओना, कादम्बरी पतिक आदमनीकेँ ओइ थर्मामीटरसँ नपैत जइसँ छह बजे साझसँ बारह-एक बजे रातिमे थाकल-मारल अबैक कारण की? नोकरीक ड्यूटी दिनका छैन, तखन?

मुदा लगले मन मुड़ि जाइन। मुड़ि ई जाइन जे अपनो देह भरिक स्वत्रंताक अधिकार जँ पुरुखकेँ नै भेटए, तँ पुरुखपना केतए औत? मुदा तैयो एते तँ इमानदारी रामरूप रखिते छैथ किने जे आमदनीकेँ छिड़ियबै नै छैथ, किछु-ने-किछु मोटगर काज तँ सम्हारिये लइ छैथ। पटना सन शहरमे दस कट्ठा घराड़ीक बीच तीन मंजिला मकान तँ हुनके कमाइक छिऐन आकि कियो दोसर देलकैन। अनेरे झूठ-फूसक गपक नाँगैर पकड़ैले वौआएब। ओना, दुनू परानीक बीच खौटका बनियेँ गेल। रामरूप बाबूक विचार जैठाम छैन तइसँ कादम्बरीक विचार हटल रहबे कएल। जमीनक नीक उपयोग भेने ने सम्पैतक नीक सुख भेटै छइ। जँ ओकर उपयोगे ने हएत तँ माटिक धरती माटि छोड़ि सोनाक थोड़े भऽ

जाएत। हँ, उपयोग केला पछाइत माटियो सोना बनै छइ। तैठाम कादम्बरीक हटल विचार ई जे खेत बेचि बैंकमे रखने निश्चित आमदनीपर पहुँच जाएब तइ हिसाबसँ परिवार चलत। ने हाथ मैल आ ने पएर मैल हएत। धारक महार टुटिते दू तरहक धारा निरमित भइये जाइए। एक जे मुख्यधारा ओकर जगह बना पेटमे समटैए तँ दोसरो एहेन ऐछे जे अपना धारामे आरो धफार पैदा कऽ दोसर दिस रेड़ैए। ओना, अखन धरि दुनू परानीक बीच केतेको दिन एहेन प्रश्नपर मतभेद होइत रहलैन। समझौतौ होइत रहलैन, मुदा कादम्बरीक आइक प्रश्न रामरूप बाबूकेँ किछु दोसर दिशामे मोड़ि देलकैन। रंग-बिरंगक प्रश्न मनमे उचड़ए लगलैन। की अपन समाज टुटि गेल? आकि अपन जिनगी टुटि गेल? एकरा की मानल जाए? माए-बापक सेवा इतिहास शास्त्र-पुराणक पन्नाक पाछू पड़ि गेल? ऐ उमेरमे केकर आशा..?

विचारमे मोड़ एलैन। एक तँ ओहिना दुनियासँ हटल छी तैपर जँ दुनू बेक्तियो हटि-हटि कऽ रहब सेहो नीक नै।

बिहुँसैत रामरूप बाबू पत्नीकेँ बौसैत बजला-

“अनेरे छोट-छीन बातक पाछू बेसी पड़ब नीक नै।”

पतिक सह पबिते कादम्बरी छिड़ियाइत बजली-

“ओही दिनसँ अहाँकेँ जनै छी जइ दिन बात काटि देलौं!”

जहिना छिड़ियाइत बातकेँ समेटल जाइत तहिना पत्नीकेँ समटैत रामरूप बाबू बजला-

“सभ दिन तँ महल्लाक सभ सेवा निवृत भेल लोक एक घण्टा-दू घण्टा एकठाम बैसते छी, तही बीचमे किए ने विचारि लेब। अनेरे किए हम बिधुआएब आकि अहीं बिधुआएब।”

पतिक विचार कादम्बरीकेँ नीक लगलैन। लड़-जड़क बाहुल्यक कारणे तँए अपन पक्ष मजगूत होइत देखलैन। तेतबे नै देखलैन तैसंग ईहो देखलैन जे पति-पत्नी–पुरुष-नारी–क बीच अदौसँ किछु-ने-किछु वैचारिक

मन-भेद होइत आबि रहल आ होइत रहत, मुदा फेर केना सम्बन्ध बनल रहल?

हारल-थाकल-मारल बटोही जकाँ पतिक बगे-वाणि कादम्बरीकेँ बुझि पड़लैन। जीतल पति-पत्नी तँ ओ ने जे अपन आ अपन परिवारक कोनो समस्या दोसराक बीच नै रखि दुनू मिलि समाधान करैत दौड़ैत जिनगी बितबैत मृत्युक धाराकेँ कूदि टपि जाएत? मुदा से तँ नै भेल! ओझराइत बाटक बात देख कादम्बरी बजली-

“सभसँ बड़ौ समाज। भने अपन बात विचारैले रखि हुनको सबहक विचार देखबैन, नीको बुझि पड़त आ अधलो, जे नीक हएत ओकरा पकैड़ लेब, जे अधला बुझि पड़त ओकरा छोड़ि देबइ। सएह ने? तइले जँ दुनू संगियों-साथीमे मुँह फुलौने रहब, सेहो नीक नै। दुनियाँक इतिहास गबाही अछि जे विषम परिस्थितिमे पुरुखो आ महिलो एक दोसराक संग छोड़ने अछि। मुदा एहेन पौराणिक गलती अपना जिनगीमे नै उतरए देब। लगभग चालीस बरख पूर्वसँ जहिना हाथ पकड़ा-पकड़ी केने एलौं, तहिना पकड़ने चलब।”

पत्नीक विचार रामरूप बाबूक घोर-मट्ठा भेल मनकेँ जेना फरिछाएल पीबै जोकर पानि बना देलकैन। बजला किछु ने। मुदा आँखि जरूर अँखिआ लेलकैन। अँखिआ ई लेलकैन जे नीक भविस दिस अपनाकेँ बढ़बए चाहि रहली अछि। रामरूप बाबूक आँखि-मे-आँखि मीलिते जेना कादम्बरीकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक पति ऐगला काज दिस बढ़ैले कहि रहला अछि। काजे ने बोलीकेँ बिलमबै छइ। जँ से नै हएत तँ काजे बिगड़ि जाएत! आ जखने काज बिगड़त आकि अनधुन गरियौनाइ शुरू करत! तइसँ नीक जे रौतुका भोजनक ओरियानमे किए ने लगि जाइ। पति लगसँ उठि कादम्बरी भनसाघर तँ विदा भऽ गेली मुदा मनक दोसर खरी उचैर गेलैन। उचैर ई गेलैन जे अखन तक कहियो ओहेन भोजन नै केलौं जेहेन मनुखक हेबा चाही। पढ़ल-लिखल परिवार रहितो

कहाँ कहियो ऐपर विचार केलौं! एक भोजन श्रमक पूर्व होइए दोसर अन्तक पछाइत, जखन लोक आराम करए जाइ छैथ। गरिष्ठ पाक जेते आरामक अवस्थामे हेतै ओते काजक अवस्थामे थोड़े हेतै? मुदा ईहो केना मानल जाए जे सबहक दिन आकि सबहक राति एके रंग होइ छै...। चौकाक बटलोहीक एक डेग पाछूए हटल कादम्बरी ठाढ़, मुदा विचारतंत्र तेते सक्रिय जे सभ अंग शिथिल पड़ि गेलैन। नजैर टकटकी जकाँ बनि गेलैन।

दुनू परानीक बीच तीन दिनक पछातिक समय बनल जे सभकेँ पूर्व जानकारी देला पछाइत विचारि लेब। तैबीच हुनको सभकेँ समय भेटतैन आ ऐबोक जानकारी रहबे करतैन। अपनो ओइ हिसाबसँ तैयारी करब।

दोसर दिन जेना कादम्बरीकेँ पानि चढ़ि गेलैन तहिना मलेटरी जकाँ समयपर नीन तोड़लैन। केना ने तोड़ितैथ? भोरुका बसंती-वयार केकरा नै बजारि छातीपर बैसए चाहैए। मुदा एहनो तँ लोक छैथे जे नीनकेँ तोड़ै छैथ। जँ नीन अपने नै टुटए चाहैत तँ ओकरा तोड़लो जाइए किने। कादम्बरियो नीनकेँ तोड़लैन।

समयपर उठि अपन सभ जवाबदेहीक काज सम्हारि बैसारक बीचक योजना बनबए लगली। चारि बजे सौंझका समय अछि। चौबीसो घण्टामे सभसँ नीक समय, नीकक माने विचारक अनुकूल मौसम। भोजनो तँ वएह ने नीक जे मौसमक अनुकूल हुअए। जँ से नै आ चैत-बैशाखमे नबका दालि खाएब तँ पेट हड़हड़ेबे, गड़गड़ेबे, पड़पड़ेबे, झड़झड़ेबे करत किने। मुदा जँ अपनो भोजनक विचार मनुख नै करत तँ नै करह। कोइ काहू मगन कोइ काहू मगन.! अपन करनी अपन धरनी अपन मरनी हेतै आकि अनकर? नीक हएत जे ओहेन भोजनक तैयारी करी जे सभकेँ सुपाच्य होइन...।

कादम्बरीक मन मानि गेलैन जे नीक विचार बुधि देलक। मुदा लगले दोसर जोरसँ धक्का दैत कहलकैन-

“सुपाच्च तँ वएह ने जे शरीर पचबए? आकि सुपाच्च बौस? जँ सुपाच्च पदार्थ सुपाच्च तँ केकरो काँच दूध पचै छै आ केकरो नै पचै छइ। केकरो गर्म दूध पचै छै आ केकरो नै पचै छइ। तखन?”

कादम्बरीक मन फेर दोसर घुरछीमे ओझरा गेलैन। एक तँ अदहे मुट्ठी टीक लोक रखैए, तहूमे जँ दसटा चिड़चिड़ी घोंसिआ जाउ तँ टीक खोलिते-खोलिते नोंचा जाएत आकि एकेबेर जड़ियेसँ कटा कात भऽ जाएत? तैपर सँ पुछबै जे तोरा अपसियाँत भेने हमरा की..! से जेहेन हएत तहिना कादम्बरीक मनमे पनपल। पनपल ई जे जिनका जे सुपाच्य होइ छैन, माने सभ दिन खाइ छैथ, हुनका लेल वएह पाक नीक हएत...।

एकमुँहरी विचार होइते फेर मन घुड़ियेलैन। घुड़ियेलैन जे जँ कोनो नीक बौस बनि जाए जे किनको नहियोँ नीक भेने मन घुमि जाइन तखन की कहबैन जे अहाँले नै तैयार छी? मन ठमकलैन। ठमैकते निआरली जे बेकता-बेकतीक विचारानुकूल पाकक ओरियान कऽ लेब। पेट तँ जंजाल छीहे ने। जँ से नै तँ हजार रसगुल्ला आ बीस किलोक रेहुक पेट जे बनौता हुनका लेल किए ने जंजाल छी...।

भोजनक सूची तैयार होइते कादम्बरी खोज-भाँज लगबए निकलबे करती जे किनका लेल की नीक। तहूमे समय लगबे करत। गप्पोकेँ कि नाँगैर होइ छै, ओकरा कि लोकक देह जकाँ आँखिक नीचाँ मुँह आकि दुबगली कान आकि मुँहक नीचाँ पेट जोड़ैक काज छै आकि कैलाशसँ मानसरोवर आकि मानसरोवरसँ गंगोत्रीक काज छै...। ओकरा तँ सौंसे दुनियाँ देखैक विचार होइ छइ। जँ से नै, तखन ऐ प्रश्नक उत्तर कथी जे ‘अहाँक दुनियाँ केहेन, तँ अपना सन।’

रामरूप बाबूकेँ खाइ-पीबैक धैनियेँ-फिकिर नै। तेकर कारण अछि जे शुरूहेसँ अपन दरमाहा पत्नीकेँ सुमझा पाक-साफ भऽ गेल छला। से नीके छेलैन। नीक ई छेलैन जे पत्नी जहिना अपन भाएकेँ प्रेमसँ भोजन करबैथ तहिना पतिक भाएकेँ सेहो। तइसँ नीक जे ऐ बरहबर्खा रोगसँ

छुट्टीए लऽ लेब नीक। तँए मन खुशी, किए कियो कहता फल्लाँ बाबू भरि पेट खैयोले ने देलैन आकि अमुक वस्तु बनबैक लूरिये ने छेलैन। किएक तँ मनुखेक मुँह छिऐ। बेटा बेरमे राजा छी आ बेटी बेर भीखमंगा!

समयसँ पूर्व कादम्बरी अपन विचार तीन बेर सभकेँ डेरे-डेरे पहुँच सुना चुकल छेली। मुदा रामरूप बाबू चुपे रहला। चुपे ऐ दुआरे रहला जे नव प्रश्न उठत, नव दिशा विचारैक प्रश्न हएत ओ तँ अपन अनुभवक संग समयसँ रस्ता मिलबैत आगू बढ़त। जँ से नै तँ समचीन केना हएत। ओना, अपनो मन ओतए ठाढ़ भऽ ऐगला जिनगीक बाटक दिशा ताकि रहल छेलैन, जँ से नै तकता तँ आनक जिनगीकेँ जहिना अपने बुझै छैथ तहिना ने आनो बुझतैन। सभ अपन मनक मालिक छी। सबहक अपन मन ओतए चढ़ि कुचैरते तँ अछि जे भाय, दुनियाँमे सभसँ बेसी बुधियार, सभसँ बेसी इज्जतदार छियौ, टिटही जकाँ हमरेपर अकास टिकल अछि...। तहिना कि दोसराक मन पाँखि लगा उड़ि नै कुचड़त जे 'हमहूँ छी।' तखन ओइ कुचरा-कुचरीमे अनघोल हएत की नै? तइसँ नीक ने जे मुँहमे ताला लगा रहब। अनेरे मन वौअबै छी। भाय, जेकर माए-बाप मरत ओकरा जँ नीन पकैड़ लइ वा ओङ्घहए लगए तखन दोसराक गति की हेतइ। मुइला पछाइत हौउ आकि जनमला पछाइत, ओकर जे ऐगला प्रक्रिया छै ओ तँ अपने करए पड़ै छै किने...।

चारि बजिते सभ आमंत्रितजन पहुँचला। मुदा बैसैमे फेड़-फाड़ भेल। फेड़-फाड़ ई जे आन दिन जेना अबैत गेला बैसैत गेला, से नै भेल। अपन-अपन गर अँटकारि-अँटकारि जोड़ लगि-लगि सभ कियो बैसला। मैनेजर साहैब जे बैंकसँ सेवा निवृत भेल छैथ, तिनका आ डॉक्टर साहैबकेँ खूब पटै छैन, जँ दुनूकेँ समय भेटैन तँ भरि-भरि राति सौन जकाँ बिद-बिदाइते रहि जेता। मुदा जैठाम सभ दौग कऽ आगाँ बढ़ए चाहैए तैठाम मैनेजर साहैब आकि डॉक्टर साहैब छूटि जाथि, सेहो तँ नीक नहियेँ...।

जहिना डॉक्टर साहैब मैनेजर साहैब लग बैसला तहिना सेवा निवृत इंजीनियर साहैब डायरेक्टर साहैब लग बैसला। फैक्ट्रीक डायरेक्टर साहैब सेहो सेवा निवृत छैथ। दुनूक विचारक विनिमय अपन रहैन, तँए बेसी हेम-छेम छैन। चाह उसरैत-उसरैत पान चलए लगल, मुदा पानक पछाइत जे परसल जाइए ओ अनका मुहेँ परसल जाएत आकि अपना मुहेँ। जेम्हर पान परसा गेल ओम्हरसँ प्रश्न उठल-

"की बात छिऐ यौ रामरूप बाबू?"

प्रश्न उठौलैन डॉक्टर साहैब। ओना, डॉक्टर साहैब बजैमे फड़कोर छैथे, नजैरे तेहेन छैन जे लगले कोनो बातकेँ पकैड़, समाजिक-परिवारिक कोनो समस्याकेँ शरीरक रोगे जकाँ एक्स-रे करा मेडीसीन आकि सर्जरीक दुनू विचार ठाँहि-पठाँहि दऽ दइ छथिन। ओना, सभ दिन लोकक बीच रहै छैथ, अखनो अपनाकेँ अथबल नै बुझि रहला अछि, भलेँ नव तकनीकक मारिक चोट किए ने जिनगीकेँ धकियबैत होइन। खाएर, जे छैन ओ तँ हुनकर बेकतीगत छिऐन। ओना, काने-कान बीआ-बान कादम्बरी कइये चुकल छेली, मुदा अपन जिम्माक आ गरिमाक मेनटेनो करब छैन्हे।

चौमास जकाँ चौकियाएल विचार रामरूप बाबूक रहबे करैन, बजला-

"गाममे पिता जीक अमलदारीमे पनरह बीघा जमीन छल, हुनका जीविते नोकरी भेल। हम नोकरी दिस बढ़ि गेलौं। बाबू खेतीएपर अँटैक गेला। दुनू परिवार दू दिस भऽ गेल। चारि पाँच बर्खक पछाइत, आगूए-पाछू दुनूक मृत्यु भऽ गेलैन, किरिया-कर्म भेला पछाइत जे गाम छोड़लौं, से छोड़नहि छी।"

रामरूप बाबूक नमहर प्रश्न, दू जिनगीक प्रश्न, एक किसानीक दोसर नोकरिहाराक। तहूमे दुनूमे लगलगाउ नै, सोलहन्नी नबक शुरूआत। सबहक मन ठमकलैन। अपन जिनगीमे भेल घटना आ बिनु

भेल घटनाक दू थर्मामीटर होइ छइ। जिनगीक प्रश्न छी, तँए सभ सबहक मुहोँ देखैथ आ आगू सुनैक प्रतिक्षो करैथ...।

कादम्बरीक मन प्रश्नक उत्तर दइले चटपटाइत रहैन। कारणो छल दुनू परानीक बीच उठल दू दिशाक बाट। मुदा पनचैतियो तँ पनचैती छिऐ, ओहिना पनचैती आ पर-पनचैतीक चलैन समाज पकड़लक आकि खूब नीक जकाँ जोति-कोरि, गोला फोड़ि चिक्कन बनबैले पकड़लक। पनचैती आकि पर-पनचैती ओहिना थोड़े उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओहिना कोनो चीज सोझे ठाढ़ होइए आकि ओकरा ठाढ़ रहैक गर बनौला पछाइत होइए। तँए पनचैतियोक ठाढ़ होइक अपन गर छइ। पहिने पहिल पक्ष अपन विचार रखता, ओइ विचारकेँ पञ्चवेदीमे वेदसँ नहाएल-धुअल जाएत, तेकर पछाइत ने दोसर पक्षक विचार, विचारमे औत? जँ से नै आनब आ पनचैतीकेँ निर्णय तक नै पहुँचऽ देबै तखन विचारक उलंघनक दोखी के हएत। तहूमे परिवारक दुनू परानीक बीचक छी, पतिक प्रति अपन अशिष्टता सोझहाँ आबि जाएत। तइसँ नीक जे डॉक्टर किसुन भायकेँ कहिये देने छिऐन तँए हुनके इशारा कऽ दिऐन...।

कादम्बरी सएह केलक। मुदा डॉक्टर साहैब अपन विचारमे डुमल रहैथ। चारि भाँइक पिताक भैयारीमे विचारक भिन्नता परिवारकेँ मटिया-मेट कऽ चौकिया देलक। तँए कोनो परिवारक प्रश्न छी, बिनु बजने दोखियो तँ नहियेँ हएब। बेर-बेर कादम्बरीक इशारा डॉक्टर साहैब देख-देख अनठबैत रहला। डॉक्टरो साहैब छह-पाँचक कमाइ नै केलैन। कियो कम्पनी उपहार देलकैन, तेतबे धरि। तँए सोझ विचार, भाय जे नै बुझिऐ तेकरा लगले किए ने मानि लिऔ। जे कोट-कचहरीक केस जकाँ पचास-पचास बरख रगड़ैत रहियौ। तइसँ केकर नीक हएत। लोको रगड़ाएत सरकारो घँसाएत...।

चुपा-चुपी देख इंजीनियर साहैब बजला-

“सबसँ पहिने दियाद-वादक भाँज लगबए पड़त, गाममे रहनिहार

भलेँ मारि-दंगा कऽ बलजोरियो कऽ सकैए मुदा जे बाहरसँ गौंआँक बीच जेता हुनका तँ नापि-जोखि कऽ जाएब नीक हेतैन। अपन सुपत केते जमीन बँचल छैन, ओ बिना बुझने केना किछु करता।”

इंजीनियर साहैब अपने गामक भगौआ भेल छला। मुदा से अपने गलतीसँ। जखन घर बनबैक झोंक चढ़लैन, तखन अपन पैत्रिक घराड़ी दियाद-वादक हाथे बेचि लेलैन। ओना, देलखिन परिवारेकेँ, इज्जत तँ रखलैन, मुदा जखन अपन रहैक मिथिलांचलक बास बेचि लेलैन, जेकरा कखनो नीक नै कहल जा सकैए आ जखन पाइ-कौड़ी जोर मारलकैन तखन गाम मन पड़लैन। मनसूबा यएह जे बेसीए कऽ कीनि लेब। मुदा जिनगी भरिक समीक्षा केला पछाइत जे इंजीनियर साहैबक किरदानीक समीक्षा समाज आकि दियान-वाद केलैन तँ ऐठाम आबि अँटैक गेला जे इंजीनियर साहैबसँ केकरा की लाभ भेल? तँ किछु ने! तखन पढ़ल-लिखल आ बिनु पढ़ल-लिखलमे की अन्तर भेल, मुरुखोसँ मुरुखपने केलैन। एकमुट्ठी भोजन करा कियो भूखलकेँ तृप्त बुझैत मुदा जिनगीक भूखक तृप्तिता बिना जिनगी ठाढ़ भेने नै होइ छइ। जीवन बनबैक लूरि इंजीनियर साहैबकेँ, मुदा कहाँ एको परिवार गढ़ि सकला...। ई बात दियाद-वादक मन मानि नेने छेलैन। तँए केतबो नाँगैर पट-पटा कऽ रहि गेला दियाद-वाद ओइ घराड़ीपर नहियेँ आबए देलकैन। कियो अपने बेथे बेथाएल तँ कियो जमीनकेँ जंजाल बुझि ओइ भीड़ जेबो ने करै छैथ...।

चुपा-चुपी देख कादम्बरीक मन भीतरे-भीतर खौंझाइत रहैन जे नीमकहराम सभ भऽ गेला। केहेन कऽ बुझा-सुझा कहबो केलिऐन आ खुएबो-पीएबो केलिऐन। मुदा कियो पीठपोहू हुअ नै चाहैए। पाशा बदलैत बजली-

“एके काज लेल बेर-बेर बैसार करब नीक नै हएत, तँए..?”

कादम्बरीक प्रश्नमे पुछरी जोड़ि मैनेजर साहैब बजला-

“मानि गेलौं जे पनरह बीघा छेलैन, तइमे नै सोलहन्नी तँ अठन्नियोँ

मानि लिअ। अदहो तँ साढ़े सात बीघा बँचबे कएल हेतैन। मुदा साफे नै बँचलैन, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।”

मैनेजर साहैबक मन बैंकक सुइद दिस भागैन जे छबे मासमे जखन सुइद मुइर भऽ चलए लगै छै तखन लाखक पूजी पानिमे दहलाइए...।

मैनेजर साहैबक बोल इंजीनियर साहैबकेँ नीक नै लगलैन। नीको केना लगितैन, मन गवाही दैत रहैन जे जहिना छोटका-बड़का सैयो पार्ट मिला मशीन गढ़ल जाइए तहिना तँ परिवारो छी। तँए, अपन प्रश्नपर अड़ान दैते बुझि पड़लैन जे साइकिलक भौल्टू जकाँ गरदैने लगसँ परिवार कटि गेल अछि। कहू जे केहेन लीला छी जे एक माए-बापक सन्तान, बेटा-बेटी भेने केना सम्पैतक अधिकारी आ नै अधिकारीक अधिकार अछि। तेतबे किए, जँ पाँच या सात भाँइक भैयारी छी तँ जेठौंस बँटैत-बँटैत छोटका सोलहन्नी बँटा जाइए आकि रहबो करैए।

गप-सप्पकेँ टेढ़-टूढ़ होइत देख रामरूप बाबू बजला-

“मानि गेलौं जे पनरह बीघामे साढ़े साते बीघा बँचल, तेकरा केना उपयोग करी से तँ विचारल जा सकैए।”

टुटल दाँतक मुँहमे पान गलगलबैत डायरेक्टर साहैब बजला-

“अपन कएल काज कहै छी। अपनो गाममे पाँच बीघा जमीन अछि, मन भेल जे पूर्वजक देल सम्पैत छी पच्छिम लेल छोड़ि दिऐ। तखन तँ भेल ओइकेँ उपजाउ बना दियै आकि परती बना दियै माने उत्पादित राखल जाए आकि परती जकाँ? कोनो कि पावैन-तिहार छी जे अनको आन सम्हारि देतै आ एक-आधटा एकादसीक जरूरत हेतै तँ दैयो देतइ। जँ उर्वर-उपजाउ बनल रहत तँ सुगमतासँ आगूक काज बढ़ौल जाएत आ नै जँ परती बना राखल जाएत तँ मुरदा-साड़ा लग बैस कऽ कानब हएत। भाय, संस्कृति आ मातृभूमिक सेवा कथी छिऐ तेकरा ने नीक जकाँ बुझए पड़त। जैठाम कण-कणमे भगवान आ कण-कण

शक्ति सम्पन्न अछि तैठाम केना कि कएल जाए, एना जँ धिया-पुताक गर्दाक घर-अँगना बना खेलब, तँ बेर झुकैत उजैर-पुजैर जाए पड़त।”

डायरेक्टर साहैबक बातमे डॉक्टर साहैबकेँ रस भेटलैन। टिटकारी दैत बजला-

“भाय साहैब, अपने तँ टटके खेतपर पहुँचल छी, तँए समयानुकूल विचार अपनहि दऽ सकै छिऐ?”

डॉक्टर साहैबक टिटकारी डायरेक्टर साहैब नै परेख सकला। अपन पूछ खिखिर जकाँ मोटगर बुझि पड़लैन...।

अठनियाँ मुस्कान भरैत बजला-

“देखू, अपन सोलहन्नी विचार नै छी मुदा जखन एक महान अर्थशास्त्री कानमे घोरि कऽ पीआ देलैन जे देखिऔ, अपना ऐठामक माने मिथिलांचलक किसानी जिनगी बेठेकान अछि। तहूमे बहरबैयाक लेल। गाममे रहनिहार तँ ओ भेला जे धार फुलाइते गाँज-डेली लऽ धारक कात जा हियासऽ लगैत जे अमार केमहरसँ आबि रहल अछि। से तँ बहरबैयाक बुत्तासँ बाहर अछि। तँए नीक हएत जे एकेबेर पूजी लगा बीस सालक खेती करि लिअ।”

ओना, डायरेक्टर साहैब कुशियारक गुल्ली बना-बना अपन बात राखए चाहै छैथ, जे जखने तरो मीठ, ऊपरो मीठ आ मनो मीठ तखन तँ मिठाइ बनबे करत। बड़ हएत तँ भुसबाक बदला लड्डू बनि जाए...।

नाँगैर पकैड़ ऐंठैत डॉक्टर साहैब बजला-

“एहेन नफगर जँ खेती हुअए तँ तेलोसँ चिक्कन। तहूमे अपन इलाका, सत-सत बेर लोक एक-एकटा खेतमे धान रोपैए आ तैयो दहा जाइ छइ। मुदा धन-धरतीक धैर्य तेते धीरजवान छै जे आँखि खोइलियो आ आँखि बन्न कैयो कऽ सदिकाल यएह कहैत जे धरती अहीं हमरा अन्न दइ छी, हृदैमे जमा कएल पानि दइ छी, अपन सिनेह-सिक्त कएल पुरबा-पछियाक रूपमे हवा दइ छी, जिनगी लेल की ने दइ छी, मुदा सभ

किछु दैतो हे धरती छाती हटौने छी।”

डॉक्टर साहैबकेँ भँसियाइत देख रामरूप बाबू बातकेँ समटैत बजला-

“बड़ सुन्नर प्रश्नक उत्तर आबि रहल अछि, एकबेर खेती करैमे ओकरा लगबैमे, जँ बीस बरख दोहरा कऽ ओइमे पूजी नै लागए आ बीस बर्खक पछाइत बीसो सालक उपजासँ बेसीक हिसाब आबि जाए तँ किए ने कएल जा सकैए।”

रामरूप बाबूक विचार सुनि डायरेक्टर साहैबकेँ आरो मनसूबा जगलैन। बमछैत बजला-

“सेवा-निवृत भऽ गेलौं तँए कि ऐ देहमे दम नै अछि? रामरूप बाबू, अपने गाम जा देखि-सुनि आउ। सागवान-गाछक खर्च सरकारी अनुदानपर आ लगबैयोमे जे खर्च औत सेहो सभ सरकारीए अनुदानपर हएत।”

डायरेक्टर साहैबक बमछी देख डॉक्टरो साहैबकेँ मन बमछैत रहैन। मुदा अपन जखन सीमा अँकैथ तँ देखैथ जे जहिना बजौल हम छी तहिना तँ डायरेक्टरो साहैब छैथ, अनका ऐठाम एहेन किछु नै हेबा चाही जे घरबैयाक प्रतिष्ठापर कोनो कचोट होइ। तँए गुम्म। मुदा तरे-तर डॉक्टर साहैबक मन ई बमछैन जे कहू केहेन भोतलोह सन विचार दऽ रहला अछि। जखन बीस बर्खक खेतक काज हाथसँ छीना जाएत तँ खेतपर रहनिहार लेल ओ हाथ की करत? तहूमे जे धरती दुनियाँक सभसँ नीक अछि, ओ फल-फूल विहीन खेतीमे फँसि जाएत, तखन केहेन रमणगर जनकक फुलवाड़ी हएत? एक तँ जन-जनक फुलवाड़ी तैपर विश्वामित्र सन ऋृषिक आगमनक संग सखी-सहेलीक संग सीता आ लक्ष्मणक संग रामक मुस्कान..!

जहिना समय उसरनपर आएल तहिना विचारोकेँ उसारिये देब सभ नीक बुझलैन। डॉक्टर साहैब बजला-

"रामरूप बाबू, गाम जा पहिने खेत ठेकना लिअ, डायरेक्टर साहैब खेतीक भार उठाइए लेलैन, तखन शुभ काजमे अनेरे बिलम करब नीक नै।"

बैसार समाप्त भेल। मुदा जहिना नअम् मासक बेथा माइयेटा बुझै छैथ तहिना नअम् जिनगीक बेथा रामरूप बाबूक मनमे कचकलैन।

बैसारक तेसर दिन, दू दिन बीचक समय अहीमे चलि गेलैन जे की करब, केना करब, के संग देत आकि नै देत। एहनो संगी तँ होइते अछि जे सदिकाल तूम्मे फेड़फाड़ करैए। एहनामे केतए बिसवास कएल जा सकैए..?

कुरसीपर बैसल रामरूप बाबू असकरे विचारि रहल छला। सरकारी सर्टिफिकेट अछि जे आब अहाँ काज करै जोकर नै छी, तैपर बलउमकी करै छी। कोन जरूरत पूर्वजक सम्पैतक अछि, जे गाममे अछि। गौंआँ जोति-कोरि कऽ खाए आकि परती बना कऽ गाए चरबए, गामक सम्पैतक हक तँ ओकरे ने भेल। जिनगीमे गाम छोड़ि पेट पकड़लौं, तैयो मन वौआइते अछि। मुदा दस गोरेक बीच जुआन हारि गेल छी, जँ पाछू हटब तँ अनेरे वएह सभ मुहेँपर थुकता जे रमरूपबाक कोन ठेकान, कोनो कि मनुख छी, धन जमा केने कथी हेतै, जखन जुआने नै तखन ओहेन मनुखक मोजरे केते। मुदा विचार जेना विचार भूमिकेँ खोदि देलकैन। खोदि ई देलकैन जे जखन दुनू परानी दस गोरेक बीच अपन विचार स्थापित करए गेलौं, तखन जे निर्णय भेल ओ दुनू गोरेक ने भेल। कोनो काज लेल आ केतौ जाइ लेल संगीक संग गप-सप्प करैत रस्ता कटि जाइए... । तही बीच कादम्बरी चाह नेने पहुँचली।

पतिक सोगाएल सूरत देख कादम्बरी व्यंग्यवाण छोड़ली-

"मन बड़ खनहन जकाँ बुझि पड़ैए?"

कादम्बरीक वाण रामरूप बाबूकेँ छातीमे बेध देलकैन। बजला-

"मन खनहन की रहत मुदा खरहर तँ अछिए। यएह सोचि रहल छी

जे अनेरे बेसी देरी किए करब। काल्हिए-परसूसँ किए ने काजमे हाथ लगा दिऐ।"

'हाथ लगाएब' सुनि कादम्बरी सहमली। सहमली ई जे 'विचार देब' आ 'विचारकेँ हाथक काजसँ मिलबैत चलब' तँ भीन बात भेल! तखन? तखन तँ यएह ने जे पति छैथ, जेना संग दइले कहता तेना देबैन। ई बात ऐछे जे दुनू परानी बूढ़ भेलौं, मुदा ईहो तँ आशा ऐछे किने जे जँ रस्ता-पेरा मन झूकत तँ दोसरक आशासँ ठाढ़ हेबे करब किने। धनक लोभ छी, मुइलो अछियापर सँ उठि कऽ आबि लोक लाठी भाँजैए। छोड़बो नीक नहियेँ हएत...।

बजली-

"हम तँ जीवनसंगिनी भेलौं, कर्ता-धर्ता तँ अहीं भेलौं, तखन जे जेना सामर्थ रहत से तेना भाँज पुड़ैत रहब।"

कादम्बरीक आस भरल आसक विपरीत दिशामे रामरूप बाबूकेँ आस लगिते मन बढ़लैन। मन बढ़लैन ओइ दिशामे जैठाम अपनाकेँ समाजक ओहन लोक जे सभसँ बढ़ल-चढ़ल अपनो बुझै छैथ आ समाजो मानै छैन, जे दोसराक लेल की केलखिन! कोन मुँह लऽ कऽ समाजक बीच जाएब? मुदा सोझहामे कादम्बरी, तँए बात बदैल बजला-

"गामक लोक बड़ टेढ़ होइए, अनेरे कहत जे अहाँ बाबरी कटबै दुआरे केशकट्टा दियाद छोड़लौं आ आइ मरै बेरमे समाजक आगिये संस्कार चाहै छी। तखन की कहबै?"

रामरूप बाबूक विचार कादम्बरी नै परेख पौली। बजली-

"केकरो अनकर सम्पैतपर जाएब जे कियो मुँह दुसत? अपन सम्पैत छी। चाहे मन्दिर बनाँउ, आकि असमसान, अपना विचारे कियो करैए। तैठाम गौंआँ किए बाजत?"

कादम्बरीक बोल जेना रामरूप बाबूक मनमे बलबोल जकाँ बुझि पड़लैन। मुदा बजला किछु ने...।

जिनगीक रक्षा केना कएल जाए, तेकरा खेल बुझै छैथ। हँ एहेन गाम-समाज अखनो अछि जे अतिथि सत्कारक विधि-बेवहार बँचा कऽ रखने अछि। रामरूप बाबू समाजक बेटा नै बनि पेला, ई दोख अखनो केकर कलंक भेल। काल्हुक लेल कोन अंक निर्धारित हएत। मुदा कादम्बरी तँ गामक पुतोहु भेलखिन। जखने गाम पएर देथिन तखने समाजक बाल-अबाल सभ अड़ियाइत कऽ अँगने लऽ जेतैन। ओइ संग अपनो रहैक ठौर-ठेकान बना नै चलब तँ समाजक कोनो ठेकान छइ। एकटा मारि-पीटि भेने सौंसे गामक लोक जहिना निपत्ता भऽ जाइए तहिना मारि-पीटि करैकाल सेहो तँ गोलियाइते अछि...।

निर्णय केलैन जे समाजक नीक-अधला समाजक भेल, अपने केना ओइमे प्रवेश करब, ई अपन काज भेल। बजला-

“तीन दिन मानि कऽ चलू। तीन दिन रहैक खेनाइ-पीनाइक फास्ट-फुड ओरियानक संग रहैक घरक जोगार सेहो केने चलब।”

“हँ मोटा-मोटी दू गोरेक बोझहा भेल। मुदा आब तँ गामे-गाम सवारियो जाइते अछि। काल्हिये भोरक प्रोग्राम रखू।”

❑ साभार : रटनी खढ़

भरमे-सरम

बच्चामे बाबू केतबो पढ़बैक परियास केलैन मुदा हम नहियेँ पढ़लयैन। अपनेसँ जे कनैठी दऽ नाम-गाम सिखा देलैन ओ अखनो कानेपर रखने छी।

पचासम बर्ख चलि रहल अछि। पौरुसाल शिक्षामित्रक उजैहिया उठल। चौक-चौराहा, हाट-बजार, गल्ली-कुच्ची सगतैर एक्के हवा बहए लगलै। जहिना हवा पीब अधमरुओ साँप फनफना उठैत तहिना मनमे उठल। उठिते गर अँटबए लगलौं। एहेन बहैत गंगामे स्नान नै कऽ लेब तँ सभ दिन पापीए रहि जाएब। दरबज्जापर बैसल विचारिते रही आकि सुन्दर भायकेँ धड़फड़ाएल अबैत देखलयैन। हुनका देखते अपन चिंता पड़ा गेल। दया उमैड़ आएल। वेचारे एक्को कौड़ीक आदमी नइ रहला। आचार्यक उपाधि लैयो कऽ गोबर-माटि भेल पड़ल छैथ। नोकरी नै भेलैन। लग अबिते पुछलयैन-

“भाय, केमहर-केमहर?”

चौअन्नियाँ मुस्की दैत बजला-

“बेतरनी पार होइक लग्न आबि रहल अछि। डारि चुकल बानरक जे गति होइ छै वएह गति अवसर चुकल मनुखोकेँ होइ छै, तँए गंगामे

हाथ धोइ लिअ।”

धारक मोइन जकाँ विचार चकभौर लेलक। पुछलयैन-

“से की?”

कहलैन-

“ऐगला साल तेते शिक्षा मित्रक बहाली हएत जे एक्कोटा पढ़ल-लिखल नै बँचत।”

असमंजसमे कहलयैन-

“भाय, हमरा तँ नामे-गामटा लिखल होइए।”

ठाहाका मारि सुन्दर भाय कहलैन-

“डेर-दू हजार खर्च करू, तेहेन सर्टिफिकेट आनि कऽ देब जे पहिलुके बहालीमे भऽ जाएत।”

रूपैआ दऽ देलिऐन सर्टिफिकेट आनि देलैन। भैकेन्सी भेल।

बेटो बी.ए. पास केने अछि। दुनू बापूत गामेक स्कूलमे दरखास दइक विचार केलौं...। कागतक जखन मिलानी केलौं तँ बेटाक उमेरसँ दू बरख कम अपन उमेर! मुदा एहेन अजोध बात बजबो केतए करब। भरमे-सरम चुप्पे रहि गेलौं।

❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता

धोरवा केतए भेल

तिला-सकराँतिक दिन, बेरुका समय। दहाएल गाम जेहने नवानक नवाबी आ तेहने तिला-सकराँतिक तिल-तिल आगू घुसकैत चलब, केँ झाड़ि देइते छइ। तेहने तिला-सकराँतिक बेरुका समय। आत्मानन्द असगरे अपना कोठरीमे बैसल अपन जिनगीकेँ निहारिये रहल छल कि मुहसँ फुटलै-

“धोरवा केतए भेल?”

छह मास पूर्व आत्मानन्द दसम क्लाससँ एगारहममे आएल छल। आन-आन विषयक संग अर्थशास्त्रक विद्यार्थी सेहो आत्मानन्द। एगारहम क्लासमे प्रवेश करिते अपन विषयमे घुसिया लगल। होइते अहिना छै जे जे जइ विषयक अध्ययन करैत ओ ओही विषयक ने रसो चुसैत अछि, सएह आत्मानन्दकेँ सेहो भेल। ओना पैछला सालक बाढ़ि, आठ बीघाबला किसानक बेटा–आत्मानन्द–क मनमे सेहो बाढ़ि अनलक। अपन ऐगला जिनगीक सम्बन्धमे विचार करए लगल जे आगूक जिनगी केहेन बनाएब। तेकर कारण भेल जे एकाएक आत्मानन्दक मनमे उपकल जे परिवारमे बिआह करै जोगकर बहिन अछि, एकटा घरो लटकले अछि जे करवनो खसि सकैए। जेकर खगता बहिनक बिआहसँ पहिनहि हएत। तैसंग अपनो सोल्हैनी भार पितेकेँ देने छिऐन। दिन-राति पढ़ितो नहियेँ

छी। जँ अहीमे सँ किछु समय निकालि अपन भार उठबैमे लगा लेब तँ एते बचत पिताकेँ हेबे करतैन। ..अपनो भार परिवारमे उठा लेब, तैयो तँ कम नइ भेल। अपना दिस आत्मानन्दकेँ देखते नन्दनवनमे फूल-फुलाएल। फुलाएल ई जे जँ वुद्धदेव बिनु दोसरक मदैत नेने भगवान बनि गेला, एकलब्य धनुर्धर बनि गेला तखन अपने...। मनमे तूफान जकाँ आत्मानन्दकेँ उठि गेल। उठि गेल ई जे जइ परिवारमे बेटीक बिआह आ रहैक घर खसल रहत, ओइ परिवार-ले स्कूल-कौलेजक पढ़ाइ केते महत् रखत, एहेन स्थितिमे पिताकेँ ईहो दोख नइ देल जा सकै छैन जे ओ केतौ अपन कर्तव्यमे चुकला। ओ तँ अपन शक्ति भरि शक्ति लगा खेती करबे केलैन आ बाढ़िमे दहा गेल। परिवारक आमद दहा गेल, मुदा खरचा तँ बढ़बे करत तहूमे दाही-दुरकाल भेने आरो वस्तुक अभाव हएत जइसँ महगी सेहो बढ़बे करत।

ओना, आत्मानन्दकेँ आन विषयक अपेक्षा अर्थशास्त्रसँ बेसी दिलचस्पी रहै मुदा ओहू दिलचस्पीमे देशक कृषि बेवस्थासँ बेसी रहइ।

आत्मानन्द जखन अपन पैत्रिक सम्पैत–आठ बीघा जमीन–देखलक तखन ओकरा अर्थशास्त्री द्दष्टिसँ आँकए लगल। आँकए ई लगल जे गामक जे पुरान ढर्ड़ाक खेतीक अछि ओइमे जाबे पाछूसँ धक्का आ आगूसँ सिकैड़ पकैड़ नहि खींचब ताबे परिवार आ कि गाम खच्चासँ निकैल नहि सकैए। एक दिस उपज ले रसायनिक खादक परहेज, दोसर दिस मवेशी नहि।

अपनाकेँ सम्हार करैत आत्मानन्द स्वअर्जित सम्पैतक उपारजन करब नीक बुझि पत्र-पत्रिका, रेडियो आ किसान गोष्ठी इत्यादिक बीच अपन सम्बन्ध बढ़बए लगल। अन्तो-अन्त ई निर्णय केलक जे सालमे अपन-देही जेते खर्च अछि, ओते सालमे उपारजन करैक अछि। सम्पतैक रूपमे खेतक संग अपन दूटा हाथ-दूटा पएर अछिए।

ओना सालो भरिक खेती अनेको रंगक अछि मुदा ऐठाम दुइए रंगक चर्च करब। साल भरिक अन्नक फसल अछि धान-गहुम आ खेरही। जइमे एकबेर रोपैन वा बाउग होइए, दोसर बेर कमठौन वा पटौनी आ तेसर बेर कटनी-दौनी, ऐ चक्रमे श्रमशक्ति माने काजक दिन कमि जाइए तहूमे विद्यार्थी जँ घन्टा-दू-घन्टा काटि अपन समय लगौत तइले तँ प्रतिदिन काज चाही। तइले दोसर रंगक खेती जे अछि- बाड़ी, फुलबाड़ी, फलबाड़ी, पनबाड़ी- सएह उपयुक्त अछि। संगे श्रमक संग उपारजनो बेसी अछि।

आत्मानन्दक मन उमकल। उमैकते नजैर आगू बढ़ल। आगू बढिते देखलक जे हमरोसँ कम उमेरक लोक होटलोमे नोकरी करैए आ गामो-घरमे गाए-महींसक चरवाहि करैए। किए करैए? जँए ओकर पेट जरै छै तँए ने करैए। आदमी रहितो हम ओकरासँ सुभ्यस्त छी। सुभ्यस्त ई जे ओकरा खेत-पथार नइ छै, हमरा अछि।

ओना उपारजनक दू रास्ता अछि, एक अछि अपन सम्पैतकेँ तेज गतिये संचालित करब आ दोसर अछि अपनासँ पाछूक विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ाएब। मुदा उपारजन लेल अपन स्वतंत्र काज आ अनकर मातहती काज–माने दोसर हाथक काजमे सेहो अकास-पतालक दूरी बनले अछि। माने ई जे अपन काज अपना सुविधानुसार, समयकेँ देखैत कऽ सकै छी मुदा अनकर हाथक से नइ होइए। जखन हमरा समय भेटत आ करए चाहब तखन जँ काज करौनिहार काज नइ दिअए, आ जखन ओ काज देत तखन जँ अपना समय नइ बँचए..! आत्मानन्दक मन थकथकाएल। बेसी काल थकथकाएल रहल नहि।

थकमकी हटिते आत्मानन्द विचार केलक- जाबे अपनापर खर्च आ अपना हाथक आमदकेँ एक सीमापर आनि नहि आगू बढ़ब, ताबे जिनगी बेठेकान बनल रहत। बेठेकान जिनगी तँ सदिकाल भयावह बनले रहैए, तँए जाबे ओकरा ठेकानपर आनि ठेकना नहि चलब ताबे जिनगी

डोल-पात करिते रहत।

एगारहम क्लासक विद्यार्थी आत्मानन्द, किताबो-काँपी आ फीसो तँ हाइये स्कूलक ने भेल। तँए हजार रूपैआ महिनाक हिसाबसँ बारह हजारक सालक जिनगी बना आगू विचार करए लगल। आगू जहाँ तकलक कि भक-दे अपन किसानी परिवार आँखिक सोझमे पड़लै। अपन खेत-पथार अछिए। बारहे हजारक तँ सालक उपैत करब भेल। तरकारी खेतीक चक्र–कृषि महाविद्यालय–पूसाक पत्रिकामे निकलल छेलै जे आत्मानन्द पढ़ि चुकल छल।

ओना तरकारी खेती लेल खेत सेहो सभ रंग अछि। मौसमक अनुकूल बरसाती खेती नीचरस खेतमे नहि भऽ सकैए, तहिना गरमीक खेती ऊँचरस खेतमे महग अछि। तैसंग ईहो तँ समस्या ऐछे जे सभकेँ सभ रंग खेतो नहि छइ।

आँखि उठा हिया कऽ आत्मानन्द आगू तकलक तँ बुझि पड़लै अधिक नीचरस खेत–जइमे एकबेर खेती भऽ सकैए–ओहन खेत बेसी अछि आ जइमे दू बेर-तीन बेर खेती हएत ओ कम अछि। मुदा नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तरकारी खेती करैक विचार मनमे अबिते आत्मानन्द पितासँ विचार लेब आवश्यक बुझलक। पिताक आगू अपन प्रस्ताव रखैत बाजल-

“बाबू, परिवार टुटि रहल अछि तँए जँ नइ बँचाएब तँ टुटि कऽ तेते निच्चाँ चलि जाएत जे समयक गतिसँ पाछू पड़ि जाएब।”

बेटाक विचार सुनि मोहनानन्दक मन मोहित भऽ गेलैन। डुबैतकेँ तिनकाक सहारा। ऐठाम तँ ओहन पुत्र बाजि रहल अछि, जे अपनेटा नइ खनदानक खाम्ह टेकैक भार उठबए चाहैए। अखन चौदह बर्खक ढेरबा अछि मुदा साल-दू-सालक पछाइत वएह ने जवान हएत...।

मोहनानन्द बजला-

“बौआ, परिवारक जँ सभ अपन-अपन भार उठा लिअए तँ परिवारमे समस्ये की रहि जाएत। किसान परिवार छी, रौदी-दाही हेबे करत। रौदिये-दाही किए, रौदी-दाही तँ फसलेटा नोकसान करत, मुदा भूमकम आकि धारक कटाउ तँ खेतेकेँ चौपट कऽ देत, केतौ बाउलसँ भरि बलुआह बना देत आ केतौ माटि काटि पानिमे मिला देत।”

पिताक विचार सुनि आत्मानन्द निश्चय केलक जे सभ दिन दू घन्टा समय खेतीमे लगाएब।

दुर्गापूजाक पछाइत, तीन कट्ठा चौमास आत्मानन्दक जोत-कोर करै-जोकर भऽ गेल। ओना जोड़ा बरदबला परिवार आत्मानन्दक, मुदा बाढ़िक चपेटमे दुनू बरद बिका गेलइ। कोदारिसँ खेत तामि कऽ आत्मानन्द पनरह साए कोबी-गाछ रोपने छल। खेती नीक उमझल रहइ। अन्तिम समय जखन यूरिया खाद दइक रहै तखन समयक ठेकान नइ रहलै। रौतुका ओस नीक जकाँ सूखल नइ छेलइ। नमी खाद पकैड़ लेलक, जे रौद पौने जड़ि गेल, जइसँ कोबीक गाछ तेना प्रभावित भेल जे फलक आसे समाप्त भऽ गेलइ।

तिला सकराँतिक दिन, आत्मानन्दक मनमे उठलै- जँ खेती सुतरल रहैत तँ आइ आमदनीक दिन रहैत, मुदा..! अपन गल्ती दिस नजैर दौड़ौलक। मुहसँ निककलै-

“धोखा केतए भेल?”

❑ साभार : बीरांगना

मीनी भ्रष्टाचार

एकाएक भोरमे समाचार भेटल जे परसू तक फारम भराएत मुदा काल्हि रबिक छुट्टी आ परसू गाँधी जयन्तीक छुट्टी छी तँए आइयेटा समय अछि।

बी.ए. फाइनलक विद्यार्थी छी। तेरह साए रूपैआ फीस लागत। ओना, जेकरा जातिक प्रमाण-पत्र रहत ओकरा तीन साए कम लगतै।

तीन साएपर नजैर अँटैक गेल। गरो नीक पकड़ा गेल रहए। गर ई पकड़ाएल रहए जे जहिना मौसमक आगम पकैड़ सचरगर किसान खेतीक हिसाब पकैड़ लइ छैथ तहिना हमहूँ पकैड़ नेने रही। माने ई जे मास दिन पहिने फारम भरैक आगम देख जातिक प्रमाण-पत्र बना नेने रही। नइ तँ तीन साए बेसी हमरो लगबे करैत। ओना, समयक धड़फड़ीमे सत्तैरसँ अस्सी प्रतिशत विद्यार्थीकेँ बेसी लगबे करतैन। तेकर कारण अछि जे जातीय आधारपर छूट थोड़े भेटैए ओ तँ जातिक प्रमाण-पत्रपर भेटैए। समैयक धड़फड़ी ई जे एक तँ फारम भरैक समाचार अचानक निकलल। दोसर, पनरह दिन पहिनैयेँ चुनाव आचार संहिता लगि गेने सभ कर्मचारी चुनावक तैयारीमे जुटि गेला।

बाबूकेँ कहलयैन- “फारम भरऽ जाएब?”

'फरम' सुनि बाबूक मनमे खुशी भेलैन। खुशीक कारण रहैन जे बेटा स्नातक-परीक्षाक मोड़पर आबि गेल। शुभ हौउ।

बजला- "केना की लगतह?"

एक तँ फारम भरैक खुशी तैसंग पिताजीक सहियाएल विचारक खुशी, मन उधियाइते रहए।

कहलयैन-

"तेरह साए लागत।"

सत्ताइस साएमे काल्हिये एक बोरा उसना चाउर बेचने रहैथ, दुइये साए खर्च भेल रहैन। घरसँ तेरह साए रूपैआ निकालि हाथमे दैत मुँह दिस देखए लगला, जे नाकरो-नुकर करैए आकि सुहरदेसँ...। ओना, अपन मन गवाही दऽ देलक जे तीन साए बँचबे करत।

फारम भरला पछाइत चुनावक घोषणा भऽ गेल जइसँ परीक्षा पनरह दिन पाछू धकला गेल। मुदा पनरह दिन पछुएने मनमे कुवाथ नइ भेल, खुशीए भेल। तेकर कारण रहए जे चुनावमे समय नोकसान हेबे करत, समय नोकसान ऐ दुआरे हएत जे एक तँ पहिल बेर वोटर भेलौं जइसँ मतदाता तँ भइये गेलौं, दोसर नेतागिरियो तँ अखने उपजत। तँए जे अवसर चुकब...।

चुनावक दिन तँइ होइते, अखड़ुआ घास जकाँ राजनीतिक पार्टियो आ नेतो जनमऽ लगल। एक तँ ओहुना राजनीतिक पार्टीक संग गाम-गामक जतियारे, धरमाले, भाषणाले पार्टी ढेरियाएल ऐछे तैपर सँ आनो-आनो राज्य सबहक पार्टीक सराइर ससैर-ससैर राज्यमे आबि गेल जइसँ जेते सराइर तेते मुँहपर सँ गाछो जनैम गेल।

एक तँ छत्तीसवर्णा गाम तैपर सँ बहरबैया आमदनी तेते भेल जे गामक लोकक विचारे बरहबट्टु भऽ गेल।

जहिना कोनो परती-पराँत आकि बलुआएल बाधक खेतमे चलैक

बाटक ठेकान नइ रहैए, जेमहर सोझ बुझि पड़ल, तेम्हरे सुगरिया चालि पकैड़ बाट बना लोक चलैए। तहिना गामोमे भेल। एके मुँहक बातो आ विचारो दिन-दिन गाड़ीक पहिया जकाँ कहियो वामी घुमऽ लगल तँ कहियो दहिनी। मुदा जे भेल से भेल, एते तँ लाभ भेबे कएल जे जइ-जइ पार्टीमे मन-भेद छल से मन-भेद मेटा गेल। जइसँ ओइ गाछ जकाँ भइये गेल जे जैड़ेसँ डारि छोड़ैए। माने ई जे गाछकेँ जैड़ेसँ झमटगर डारि निकलल ओइमे एक-गच्छा जकाँ सिरगर डारि आकि धड़े बनब भरिया जाइ छइ। खाएर जे हौउ...।

मुदा ई तँ भेल जे एक-गच्छा पार्टी राजसँ उपैट दू-डरिया, तीन-डरिया, चारि-डरिया, पँच-डरिया, छह-डरिया तक बनि ठाढ़ भेल। एक तँ बिहार ओहन बिहार छी जेतए रंग-बिरंगक यात्री घुमैले एबे करत, तैठाम राजेटाक विचार चलत, से केना हेतइ। आन-आन राजक मकैसँ लऽ कऽ बजरा-बजरीक संग धानो-गहुम तँ चलिये आएल। जइसँ फेर एक-गच्छा सबहक चास लगि गेल।

चुनावक नोमिनेशन शुरू होइसँ पहिने चौक-चौराहापर पटका-पटकी शुरू भेल। जइसँ मेला-ठेला जकाँ आकि सर्कस-सिनेमाक घर जकाँ तेना घोल हुअ लगल जे चिन्हे-पहचीन बिला गेल। सोझहे हल्ला हुअ लगल। हल्लो केनिहार कि अदी-गुदी, सोझहे टिकाशने लगसँ भाषण पकैड़ लिअए। मुदा जे भेल, से नीके भेल, भगवान सभकेँ भल करथुन।

तैबीच एकटा जरूर भेल जे जहिना एस्पर्म लाखो-लाख मिलैत एकटा बनि रहि जाइए तहिना चुनाव छनाइत-छनाइत एकटा बातपर आबि अँटैक गेल। ओ अँटकल भ्रष्टाचारपर। सबहक मुद्दा माने सभ पार्टीक मुख्य भाषण भ्रष्टाचारपर आबि अँटैक गेल।

जेठ मास जकाँ चारू बाधमे लू नाचए लगल। लू ई नाचए लगल

जे जेहने प्रश्न तेहने वोट लेनिहारो आ तेहने देनिहारो। पनचैती हेबे करत।

चुनाव गेल। परीक्षा आएल। मुदा सिलेवशक किताबक संग हेल्पे बुकटा पढ़ने रही। प्रश्नोत्तरी किताबसँ भेँट नइ। तँए अखबारक न्यूज जकाँ पेपरसँ प्रश्नक उत्तर तकैमे कनी-मनी छह पाँच भइये जाइ छै, से तँ भेबे कएल। मुदा बेसी नम्बर नइ तँ कमो नम्बरसँ पास करबे करब। मुड़ पलटे नाचे साहु...।

जखन पास करैक बिसवास मनमे ऐछे तखन मन किए ने खुशी रहत। सालक परीक्षाक विसर्जन भेल। लटैत-बुड़ैत हमहूँ स्नातक भेलौं।

दोसर साल चढ़िते विश्वविद्यालयमे दीक्षान्त समारोह भेल। हमहूँ स्नातक बनि भाषण सुनलौं। ओ भाषण नइ जे दीक्षा पहिने शिक्षा पछाइत देल जाइ छै बल्कि ओ भाषण जे शिक्षाक पछाइत दीक्षा देल जाइ छइ।

स्नातक बनि गाममे छी। अपन जिनगी दिस नजैर उठेलौं। परिवार बना बसाएब अछि जे कोनो नव काज नहियेँ छी। अदौसँ होइत आबि रहल अछि आगूओ होइत रहत। पिताक परिवारक देखल-भोगल जिनगी ऐछे तँए मनमे बेसी उज-माज नइ भेल। असथिरे रहल। विचार मोड़ लेलक। पैछला चुनावक प्रश्न– भ्रष्टाचार-पर मन दौड़ गेल।

पिताजी जे बजारसँ समान अनैले पाइ दइ छला, तइ पाइक हिसाब कहियो कहाँ सुमझौलिऐन। जइसँ ने ओ वस्तुक उचित मूल्य बुझलैन आ ने अपन डायरीक हिसाब शुद्ध रहल। फजिलाहा पाइक अँटावेश ओही वस्तुक सूचीमे ने मीनहा करब?

...धक-दे मन फारम भरैपर पहुँचल। तीन साए रूपैआ तँ अखनो मने अछि। मुदा आब उपाइये की?

मनमे उठल- यएह ने मीनी भ्रष्टाचार भेल!

❑ साभार : खसैत गाछ

सोमनाकाका

भरि राति ओछाइनपर एक कड़सँ दोसर कड़ उनटैत-पुनटैत सोनमाकाका करवनो उठि कऽ बैसै छला, तँ करवनो पेशाब करैले बाहर निकलै छला। पोह फटिते चिड़ै-चुनमुनीक चहचहेनाइ सुनि डिबिया नेस कुट्टी काटए लगला। पत्नीक इलाज करबैले डॉक्टर ऐठाम जाएब छैन। काल्हिए डेढ़ साए-मे खस्सी बेचला। सबेरे विदा हएब तखन ने समयपर पहुँच बेर धरि घुमि कऽ आबि सकब। तँए सोनमाकाका औगताइ करैत गाम परहक काज सम्हारए लगला। घरवालाक चाल-चूल पाबि रूपनी सेहो उठि कऽ हाँइ-हाँइ मकैक चिक्कस निकालि चूल्हि लग पानि छीट पजारली। रोटिपक्का धिपै दुआरे चूल्हिपर चढ़ौली। चिक्कसमे लसिए ने पकड़ै तँए बेसी काले सानि दुनू हाथ पानिमे भिजा-भिजा रोटी ठोकि रोटिपक्कामे देली। रोटिपक्कामे रोटी दऽ कोठीपर रखल मौनीसँ चारिटा अल्लू निकालि चूल्हिमे घोंसिया देलखिन। जाबे किरिण फूटै ताबे रोटी आ सन्ना बनि गेल। सोनमाकाका नादिमे कुट्टी दऽ पानि छीट दुनू हाथे मिला गाएकेँ घर-सँ-बाहर केलैन आ लोटा लऽ कलपर जा हाथ-मुँह धोइ पानि नेने एला। अपनेसँ पिढ़ी लऽ जलखै करैले बैसला। पतिक आगूमे थारी दऽ रूपनी कलपर जा हाथ-पएर धोइ आबि चूल्हिए लग बैस खाए लगली। जलखै खा धोती, गोल-गला आ पैरमे चट्टी पहिर सोनमाकाका

पत्नीकेँ कहलैन-

“केते दूर जाए पड़त से नइ बुझै छिऐ, फुर्ती करू!”

पत्नीकेँ कहि सोनमाकाका काँख तर छाता, कान्हपर तौनी आ धोतीक खूटमे रूपैआ बन्हलैन आ विदा भेला। ..रूपनीकेँ हुक्काक चहैट छैन। बिना हुक्के भरि दिन केना कटतैन, मुदा हुक्का लैयो केना जेती, तँए बीड़ी-सलाइ खोंइछामे लऽ तैयार भेली। आगू-आगू सोनमाकाका पाछू-पाछू रूपनी बजार दिसुका बाट पकैड़ विदा भेल।

तिनमहला भारी-भरकम मकान देख सोनमाकाकाकेँ फाटकसँ भीतर जाइक साहसे नै होइन। पीचपर ठाढ़ भऽ रिक्साबलाकेँ पुछलखिन-

“बौआ, डॉक्टर साहैब ऐठाम जाएब?”

“जा-जा वएह मकान डॉक्टर साहैबक छिऐन।”

रिक्साबला हाथक इशारा दैत बाजल।

पीचसँ उतैर फाटक लग सोनमाकाका जाइते छला कि खाटपर टँगने एकटा रोगीकेँ भीतर जाइत देखलैन। सोनमोकाका पाछू-पाछू बढ़ला। लोकक करमान लगल देख रूपनीक दिल दहैल गेलैन। मने-मने बजली-

“बाप रे बाप, एते दुखता केतए-सँ एलइ! असकरे डॉक्टर साहैब केना इलाज करथिन!”

सोनमाकाका भीतर जा कम्पाउण्डर लग फीस दऽ पुरजा बनौलैन। पुरजा दैत कम्पाउण्डर सोनमाकाकाकेँ कहलकैन-

“ताबे बाहर जा बैसू। जखन नम्मर औत तखन सोर पारि लेब।”

सोनमाकाका बाहर निकैल फुलवाड़ीमे घुमि-घामि फूल देखए लगला। रंग-बिरंगक फूल फुलवाड़ीमे। कोनो-कोनो सुगन्धितो आ कोनो-

कोनो बिना सुगन्धेक। किआरी बनल। पतियानीमे फूलक गाछ रोपल। पटैले पनिबट बनल। टहलै-बुलैले दू हाथ चाकर रस्ता। रस्तापर गदगर दुभि...।

पछबारि भाग नीमक गाछ तर बैस सोनमाकाका तमाकुल चुनबए लगला। चून झाड़ि तमाकुल मुँहमे लऽ आगू तकलैन कि दस-बारहटा खढ़ियाकेँ गाछक दोगे-दोग दौगैत देखलखिन। कोनो उज्जर, कोनो कारी, कोनो भटरंग खढ़ियाकेँ देख दुनू परानी सोनमाकाकाकेँ खुशी होइत रहैन। हवा सिहकैत छल। नीमे गाछ तर गमछा बिछा सोनमाकाका पड़ि रहला। थोड़े-कालक पछाइत कम्पाउण्डरकेँ सोर पारिते दुनू गोरे डॉक्टर लग पहुँचला। रूपनीकेँ ब्रेंचपर बैसा डॉक्टर आला लगा जाँच करए लगलखिन। बेमारीक भाँज नइ बुझि डॉक्टर साहैब सोनमाकाका दिस ताकि पुछलखिन-

“केते दिनसँ बेमार छैथ, की सभ होइ छैन?”

मिरमिरा कऽ सोनमाकाका बजला-

“पौरूँका साल गाममे हैजा भेलइ। बड़ लोक मुइलै। हमरो जेठका बेटा आ मझिली बेटी मरि गेल। तहिए-सँ बेमारीक परबेस भऽ गेलइ।”

“कएटा बाल-बच्चा अछि?”

“आब एक्केटा छोटकी कनटिरबी रहल।”

डॉक्टर साहैब एकटा टाँनिक लिखि कागत दऽ देलखिन।

कम्पाउण्डर सामनेमे रोडक पच्छिम दबाइ दोकान हाथक इशारासँ सोनमाकाकाकेँ देखा देलकैन। खाट उठा कऽ जे अनने छल ओकरा देख सोनमाकाका पुछलखिन-

“भाय, तोरा रोगीकेँ की भेल छह?”

माथ कुरियबैत ओ बाजल-

“की कहब भैया, हमरा भायकेँ दूटा स्त्री। अपने हर जोतए गेल रहए। आँगनमे दुनू सौतिन झगड़ा करए लगल। छोटकी बुफगर, ओ बड़कीकेँ उठा कऽ सिलौटपर पटैक देलकै आ मुकियाबए लगलै। मुकियबैत-मुकियबैत बेहोश कऽ देलकै। जाबे भैयाकेँ खबैर होइ आ आबै ताबे थारी-लोटा-नुआक मोटरी बान्हि समदौआ पड़ा गेल। हमहूँ गामपर नइ रही। जखन एलौं तँ देखलिऐ। लगले एक साए रूपैआ पितियाइनसँ लऽ टँगने एलौं।”

दबाइ-फीस लगा सोनमाकाकाकेँ साए रूपैआ खर्च भेलैन। रूपैआ गनि देखला तँ पचास रूपैआ बँचल रहैन। मने-मन सोचलैन जे कहिया बजार आएब कहिया नइ। से नइ तँ बिछानोक तकलीफ अछि आ अन्नो राइ-छित्ती होइत रहैए। किराना दोकान जा सुपारीबला खलिया चारिटा प्लास्टिकक बोरा कीनि लेब। अन्न रखैले दूटा बोरे राखब आ दूटाकेँ सिऐन उधारि कऽ बिछानो बना लेब। पथारो सूखत आ सुतबो करब...। जखन बजारसँ बहरेला आकि धक-दे सोनमाककाकाकेँ मन पड़लैन जे बजार एलौं किछु खेलौं कहाँ? घुमि कऽ कनी आगू बढ़ला कि मुरही-कचड़ी बेचैत एकटा बुढ़ियाकेँ देखलैन। पाँच रूपैआक मुरही-कचड़ी मिला सोनमाकाका कीनि लेला। अदहा अपने गमछाक खोचैड़ बना लेलैन आ अदहा रूपनीकेँ देलखिन।

रूपनी खोंइछामे लऽ लेली। दुनू गोरे रस्तो चलैथ आ खेबो करैथ। कचड़ीकेँ गुड़ि मुरहीमे सोनमाकाका मिला देने रहथिन। थोड़े दूर आगू बढ़ला तँ मुँहमे मिरचाइक टुकड़ी पड़ि गेलैन। कड़ू मिरचाइ रहने सोनमाकाकाकेँ हुचकी उठि गेलैन। दुनू आँखिसँ नोर सेहो झहड़ए लगलैन। जहाँ हाथसँ नोर पोछला कि आँखियोमे लगि गेलैन। पानिक केतौ पता नहि। सोनमाकाका सुसुएबो करैथ, आँखिसँ नोरो चुबैन आ हुचकबो करैथ। मील भरि जखन बढ़ला तँ रस्ताक बगलमे उतरबारि भागमे इनार देखलैन। इनार देखते सोनमाकाकाक हूबा जगलैन। इनारक

चारूकात सिमटीक लहरा बनल अछि, ओहीपर चारि-पाँच गोरेकेँ पानि भरैत देख हुचकैत सोनमाकाका बजला-

“बुच्ची, कनी पानि पिआबह, कड़ू लगल अछि!”

बिच्चेमे फेर हुचकी उठलैन। हुचकैत आ सुसुआइत सोनमाकाकाकेँ देख पनिभरनी सभ आँचरसँ मुँह दाबि-दाबि हँसबो करए। करिया डोलमे पानि भरि सोनमाकाकाकेँ देलक। पानि पीब सोनमाकाका इनारक बगलेमे कनैल फूलक छाहैरमे बैस खाए लगला। तैबीच करिया भूल्लीकेँ कहलक-

“हे गै पितरिया आँखिवाली बाबाकेँ देख-देख हँसै छीही?”

आँखि डेढ़ करैत भूल्ली करियाकेँ कहलक-

“हे गै जरसी गाए, अनके टेटरे सुझै छौ। देखै छीही रूपनीदादीकेँ अखनो बाबाक संग हाट-बजार घूमैले जाइत अछि।”

बिच्चेमे नेंगरी बहिरीकेँ कहलक-

“अपना सभ चल। एकरा दुनूकेँ ठिठियाए दही। नहेबो ने केलौं हेन।”

सोनमाकाका पानि पीब तमाकुल चुनबए लगला। रूपनी बीड़ी नेस पीबए लगली। दुनू गोरे रस्ता धेलैन। अपना गामसँ कोस भरि पाछूए दुनू परानी रहैथ कि रौदक गरमी लगलैन। रस्ताक बगलेमे पीपरक गाछ देख दुनू परानी सुसताइक विचार केलैन। भोलबाकेँ पहिनेसँ सुसताइत देख सोनमाकाका पुछलखिन-

“तूँ केतए-सँ अबैत छेँ भोला?”

उठि कऽ बैसैत भोलबा कहलकैन-

“तेल पेरबैले गेल छेलौं। रौदमे मन घूमए लगल। काकीकेँ केतए लऽ गेल छेलहक?”

“की कहबौ भोला। तीन सालसँ विपैतमे पड़ल छी। साल भरिसँ बुचिया-माए तरे-तर खियाएल जा रहल अछि। पहिने होइ छेलए जे बेटा-बेटी मुइलाक सोग भऽ गेलै, मुदा डॉक्टर लग गेलौं तँ बेमारी ठहरल।”

“देखहक काका, ऐ देहियाकेँ कोन ठेकान। मुदा जाबे तक शरीरमे परान रहै छै ताबे तक सेवा करैक चाही। जाबे तक आँखि तकै छह तेतबे-काल ई दुनियाँ अछि आ स्वर्ग-नर्क सभ एतै छइ।”

“बेस कहलेँ भोला। ई तँ अपनो सोचै छी जे घरवालीक भार घरबलापर रहै छइ।”

“काका, हमर विचार अछि जे दोसर बिआह कऽ लएह। बिना बेटे बापकेँ गति नै होइ छइ।”

“भोला तूँ चौल करै छँह। बुढ़ाड़ीमे दोसर बिआह कऽ गरदैनमे ढोल बान्हब! जाबे थेहगर छी, कहुना-कहुना दिन कटिये जाएत, बादमे बुझल जेतइ।”

तीनू गोरे गाम दिसक बाट पकड़लैन। थोड़े आगू एलापर पिपराहीमे हल्ला सुनलैन। कान लग हाथ दऽ दऽ सभ कियो अकानए जे हल्ला कथीक होइ छइ। ओना गामे छिऐ, कोनो-ने-कोनो हल्ला होइते रहै छइ। हल्ला सुनि सभ अपन-अपन डेग नमहर केलैन। गाममे प्रवेश करिते हल्ला स्पष्ट सुनाइ पड़ए लगलैन। कियो कहै ‘नीक भेलै’ तँ कियो कहै ‘अधला भेलइ।’ तीनू गोरेकेँ कोनो भाँजे ने लगैन। रस्ताक दछिनबारि भाग मुनेसरकेँ दरबज्जापर बैसल देख तीनू गोरे रस्ता छोड़ि मुनेसर ऐठाम जा पुछलैन।

मुनेसर अखरे चौकीकेँ अंगपोछासँ झाड़ि पहिने तीनू गोरेकेँ बैसैले कहि कहए लागल-

“बजैत लाज होइए। मुदा जब पुछलौं तँ कहबे करब। आ-हा-हा रामलोचनकाका छला! कहियो केकरो अधला नै केलैन आ ने केकरोसँ

कहियो मुहाँ-ठुठी भेलैन। सभ साल कातिकमे भोज कऽ सौंसे गौंआँकेँ खुआबै छला। कोनो चीजक कमी नहि। वेचारे मरला आकि तेहेन चालि-चलैन बेटा धेलकैन जे सभ सम्पैत बोहौलक। घैला-घैले ताड़ी पीब अनेरो लोककेँ गरियेबो करइ। घराड़ियो नै बँचलै। बापक रखल नाओं 'रामकिसुन' रहै जेकरा सभ बतहा कहए लगलै। वएह मुइल, तँए कोइ नीक कोइ अधला कहै छइ।"

सोनमाकाका मुनेसरसँ पुछलक-

"परिवारमे के सभ छइ?"

"एकटा तेरह-चौदह बर्खक बेटा छइ। ओहो मइटुग्गर अछि। समदौआ बौह जे छेलै ओ मास दिन पहिने भागि गेलइ। अन-अनकेँ बतहा मुइल। अँगनामे ओहिना पड़ल अछि। ने बाँस छै जे चचरी बनत आ ने कपड़ा छइ। लगमे बैस बेटा कनै छइ।"

मइटुग्गर सुनि रूपनी काकीक आँखिमे नोर आबि गेलैन। सोनमा-कक्काक हृदए पसीज गेलैन। बजिते-बजिते मुनेसरक आँखिमे सेहो नोर आबि गेल। सोनमाकाका मुनेसरकेँ कहलखिन-

"भाय साहैब, मुरदा जरा दियौ। बेटा धन छिऐ, चरबाहियो करि कऽ जीबे करतै।"

सोनमा-कक्काक विचार सुनि मुनेसरक मन बदैल गेल। चौकीपर सँ उठि बाजल-

"सभ कोइ चलि कऽ देखियौ। जँ कोनो जोगार हेतै तँ अँगनेमे बेटासँ मुँहमे आगि दिया गारि देबइ।"

रामकिसुन बतहाक बेटाक नाओं भुखना। जहिना पूब-मुहेँ बतहा सुतल तहिना अछि। भुखना लगमे बैसल कनबो ने करैत। केते कानत। कनैत-कनैत मुँह दुखा गेलइ। जहिना ओसमे भीजल दुभि रौद लगिते सुखि जाइत तहिना मुनेसरक क्रोध भुखनाक दशा देख सुखि गेल। हृदए

पघिल गेलइ। डेन पकैड़ मुनेसर भुखनाकेँ उठा कहलक-

“बच्चा, अखैन सँ तोरा हम बेटा बना रखबौ।”

मुनेसरकेँ देख टोलोक लोक एकाएकी आबए लगल। सोनमाकाकाकेँ जे बीस रूपैआ बँचल छेलैन ओ डाड़सँ निकालि कपड़ा-ले देलखिन। मुनेसर अपने गाछीमे जरबैले सेहो कहलक। जारैन आ चचरीक बाँस सेहो देलक। सभ मिलि बतहाकेँ जरौल गेल। समाज समुद्र होइ छइ। अधला-सँ-अधला आ नीक-सँ-नीक सबहक समाबेश समुद्रे जकाँ समाजोमे होइ छइ।

गरमी मास रहने सोनमाकाका भोरे हाँसू-छिट्टा लऽ घास-ले विदा भेला। कनी आगू बढ़ला तँ मनमे एलैन जे भुखनाकेँ अपने ऐठाम आनि बेटीक संग बिआहो कऽ देबै आ रखियो लेब। घुरि कऽ आबि हाँसू-छिट्टा रखि छाता लेलैन आ पिपराही विदा भेल। पिपराही जा मुनेसरकेँ कहलखिन-

“भाय, हमरो बेटा नै अछि, एकटा बेटी अछि। विचार भेल जे भुखनाकेँ बेटीसँ बिआह कऽ जमाए बना राखी। ओहू बच्चाकेँ नीक हेतै आ हमरो दुनू परानीकेँ।”

हँसैत मुनेसर-

“तेलोसँ चिक्कन। अखने भुखनाकेँ नेने जाउ।”

सोनमाकाका भुखनाकेँ संग केने अपना ऐठाम एला। गाममे जेते घरहटिया अछि, सभकेँ घरहटाइक एक-एकटा काज करैक लूरि सोनमाकाका सिखौने छथिन, तँइ सभ काका कहै छैन।

❑ साभार : अर्द्धांगिनी

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत

गाम बिसैर गेल

ठकहरबा

समैयक बेरबादी

न्याय चाही

रिजल्ट

बाल बोध

अपन गारि अपन दुआरि

सरही सौबजा

अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध

कन्हा भँट्टा

फलहार

गावीस मोइस

निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा

मानसरोवर यात्रा

गामक शकल-सूरत

मितक प्रयोजन

चैन-बेचैन

पाइक इज्जत

माघक घूर : 1

मधुमाछी

मति-गति

नैहराक धाड़

माघक घूर : 2

चहकल विचार

राक्षसक झड़

सद्विचार

पोखरिक सैरात

मनकमना

कटौज

किछु ने

हथियाएल खुरपी

झुटका विदाइ

खुदियाएल

गलती अपने भेल

बत्तु

असिरवाद उलैट गेल

उड़हैड़

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेंमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज	बेटीक लिलसा
बाबा बेलेश्वरनाथ	पुरान साड़ी
भोँटक गहमी	अभिनव अनुभव
जेतए जे हौउ	अड़िकट्टा चोर
नौमीक हकार	उझट बात
एकतीस मार्च	बहिन
अगिलह	मर्माहत
स्वर्ग आ नर्क	अलपुरिया बरी
पीरारक फड़	दुधियाएल बरखा
मनकेँ फुसलबै छी	चोरूक्का झगड़ा
अकास दीप	त्राहि-कृष्ण
माघ नहाइले जाएब	संकट
अतहतह	काँच सूत
चौरचनक दही	बीरांगना : 2
तेतर भाइक कविता	सोग
अपन रोपल गाछी भुताहि	विघटन
डभियाएल गाम	बगदल गाम
अखरा-दोखरा	कलंक
गाछपर सँ खसला	उनटन
सोनाक सुइत	विद्गूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही
अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1
गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि
दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद
बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।


₹ 50
9 789388 421683


पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452